

69



و جیشور و سس کار مالینہ عبدال

AVAILABLE AT :

SRI NAGAR (KASHMIR)
Vijayshwar Jyotish Karalaya
Bij Bihara.

KASHMIR PRINTING PRESS
Tehsil Road, Anant Nag,

DELHI

DEHATI PUSTAK BHANDAR
Chawri Bazar, Delhi-110006
Tel No. 261080

NEW DELHI

Shri K. N. JALA
Pamposh Enclave, New Delhi
Tel. : 645299

JAMMU

NAND LAL & SONS, Book Sellers
Pakka Danga

BHASIN STATIONERY STORE
City Chowk

GUPTA STATIONERY

City Chowk

विजयेश्वर जन्त्री के सम्पादक



ज्योतिषी प्रेमनाथ शास्त्री



श्रीविष्णुसुखपंथाभा

मयुद्धिमं. ५. ५७ विक्रम. १. १५

अभ्यासक - इंदिरा प्रभाकर साहू

ॐ तिथी श्रीकृष्ण, ॐ तिथी कर्माचार मन्त्र लंका नव मन्त्र

विश्वविद्यालय कम्पनी

श्रीगणेशाय नमः ।

[illegible]

०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००

०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100

सुीमपुधिसंवत् ५८७ वैश्वदि ३८ गं ५ मेषवरा कंधीठो कशी भिसुभीन उक्ते॥ तस्यु लरीठो डिनीली कसुसु उन नष्टिाभ

[illegible]

શ્રીવિદ્યાયેનુ પંચાંગ મિત્રે ૬૫૩' દ્વિતીય પ્રમાણ મુખી કાશીનાથ મંત્ર વિદ્યાયેનુ કાદમ્બ કાન્નાડક મીનાગ કાન્નાડી ॥

[illegible]

[illegible][illegible][illegible]

[illegible]

01	02	03	04	05	06	07	08	09	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
01	02	03	04	05	06	07	08	09	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100

०१३	०२३	०३३	०४३	०५३	०६३	०७३	०८३	०९३	१०३	११३	१२३	१३३	१४३	१५३	१६३	१७३	१८३	१९३	२०३	२१३	२२३	२३३	२४३	२५३	२६३	२७३	२८३	२९३	३०३	३१३	३२३	३३३	३४३	३५३	३६३	३७३	३८३	३९३	४०३	४१३	४२३	४३३	४४३	४५३	४६३	४७३	४८३	४९३	५०३	५१३	५२३	५३३	५४३	५५३	५६३	५७३	५८३	५९३	६०३	६१३	६२३	६३३	६४३	६५३	६६३	६७३	६८३	६९३	७०३	७१३	७२३	७३३	७४३	७५३	७६३	७७३	७८३	७९३	८०३	८१३	८२३	८३३	८४३	८५३	८६३	८७३	८८३	८९३	९०३	९१३	९२३	९३३	९४३	९५३	९६३	९७३	९८३	९९३	१००३
-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	------

ਪ੍ਰੀਤਮਪੁਰਿਜੰਗਮ ਪੰਛਤ ਸੁਭਿਰਵਤਿ ੭੦ ਸੰ ੦੩ ਕੰਪੁਧ ਕੰਠੋਂ ਬਿੰਦੀ ੭ ਮੀਸ ਮੋਰਾ ਤੁਕਾ ਤੁਕੁਮੁ ਸੁਠੈ ਨਧੁ ਮਘਾਨੀਚੁਲੀਯੀਸਧਾਧਿਕੇ

[illegible]

[illegible]

979	978	977	976	975	974	973	972	971	970	969	968	967	966	965	964	963	962	961	960	959	958	957	956	955	954	953	952	951	950	949	948	947	946	945	944	943	942	941	940	939	938	937	936	935	934	933	932	931	930	929	928	927	926	925	924	923	922	921	920	919	918	917	916	915	914	913	912	911	910	909	908	907	906	905	904	903	902	901	900	899	898	897	896	895	894	893	892	891	890	889	888	887	886	885	884	883	882	881	880	879	878	877	876	875	874	873	872	871	870	869	868	867	866	865	864	863	862	861	860	859	858	857	856	855	854	853	852	851	850	849	848	847	846	845	844	843	842	841	840	839	838	837	836	835	834	833	832	831	830	829	828	827	826	825	824	823	822	821	820	819	818	817	816	815	814	813	812	811	810	809	808	807	806	805	804	803	802	801	800	799	798	797	796	795	794	793	792	791	790	789	788	787	786	785	784	783	782	781	780	779	778	777	776	775	774	773	772	771	770	769	768	767	766	765	764	763	762	761	760	759	758	757	756	755	754	753	752	751	750	749	748	747	746	745	744	743	742	741	740	739	738	737	736	735	734	733	732	731	730	729	728	727	726	725	724	723	722	721	720	719	718	717	716	715	714	713	712	711	710	709	708	707	706	705	704	703	702	701	700	699	698	697	696	695	694	693	692	691	690	689	688	687	686	685	684	683	682	681	680	679	678	677	676	675	674	673	672	671	670	669	668	667	666	665	664	663	662	661	660	659	658	657	656	655	654	653	652	651	650	649	648	647	646	645	644	643	642	641	640	639	638	637	636	635	634	633	632	631	630	629	628	627	626	625	624	623	622	621	620	619	618	617	616	615	614	613	612	611	610	609	608	607	606	605	604	603	602	601	600	599	598	597	596	595	594	593	592	591	590	589	588	587	586	585	584	583	582	581	580	579	578	577	576	575	574	573	572	571	570	569	568	567	566	565	564	563	562	561	560	559	558	557	556	555	554	553	552	551	550	549	548	547	546	545	544	543	542	541	540	539	538	537	536	535	534	533	532	531	530	529	528	527	526	525	524	523	522	521	520	519	518	517	516	515	514	513	512	511	510	509	508	507	506	505	504	503	502	501	500	499	498	497	496	495	494	493	492	491	490	489	488	487	486	485	484	483	482	481	480	479	478	477	476	475	474	473	472	471	470	469	468	467	466	465	464	463	462	461	460	459	458	457	456	455	454	453	452	451	450	449	448	447	446	445	444	443	442	441	440	439	438	437	436	435	434	433	432	431	430	429	428	427	426	425	424	423	422	421	420	419	418	417	416	415	414	413	412	411	410	409	408	407	406	405	404	403	402	401	400	399	398	397	396	395	394	393	392	391	390	389	388	387	386	385	384	383	382	381	380	379	378	377	376	375	374	373	372	371	370	369	368	367	366	365	364	363	362	361	360	359	358	357	356	355	354	353	352	351	350	349	348	347	346	345	344	343	342	341	340	339	338	337	336	335	334	333	332	331	330	329	328	327	326	325	324	323	322	321	320	319	318	317	316	315	314	313	312	311	310	309	308	307	306	305	304	303	302	301	300	299	298	297	296	295	294	293	292	291	290	289	288	287	286	285	284	283	282	281	280	279	278	277	276	275	274	273	272	271	270	269	268	267	266	265	264	263	262	261	260	259	258	257	256	255	254	253	252	251	250	249	248	247	246	245	244	243	242	241	240	239	238	237	236	235	234	233	232	231	230	229	228	227	226	225	224	223	222	221	220	219	218	217	216	215	214	213	212	211	210	209	208	207	206	205	204	203	202	201	200	199	198	197	196	195	194	193	192	191	190	189	188	187	186	185	184	183	182	181	180	179	178	177	176	175	174	173	172	171	170	169	168	167	166	165	164	163	162	161	160	159	158	157	156	155	154	153	152	151	150	149	148	147	146	145	144	143	142	141	140	139	138	137	136	135	134	133	132	131	130	129	128	127	126	125	124	123	122	121	120	119	118	117	116	115	114	113	112	111	110	109	108	107	106	105	104	103	102	101	100	99	98	97	96	95	94	93	92	91	90	89	88	87	86	85	84	83	82	81	80	79	78	77	76	75	74	73	72	71	70	69	68	67	66	65	64	63	62	61	60	59	58	57	56	55	54	53	52	51	50	49	48	47	46	45	44	43	42	41	40	39	38	37	36	35	34	33	32	31	30	29	28	27	26	25	24	23	22	21	20	19	18	17	16	15	14	13	12	11	10	9	8	7	6	5	4	3	2	1	0
-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ਭਵਾਨੀ ਨਮਸਕਰਮੁ ! ਪੰਗਮੁਖੀ


भैरव मुक्तं भं कथयं विष्णुशक्तदत्तय विष्णुविद्या उवा श्रीनगर कालापरु से भंगवा कथनाठ उठयं

ॐ
--

[illegible]

प्राचीन सन्त्र, यन्त्र, तन्त्र, जादू व सामुद्रिक ग्रन्थ

असली प्रा. हस्तलि० मंत्र महार्णव 171/-	असली प्रा. हस्तलि वृहद् मंत्र-मानेष्ट 501/-
असली प्रा. हस्तलि० यंत्र महार्णव 171/-	तन्त्र कीतुहलम् 251/-
असली प्रा. हस्तलि० तंत्र महार्णव 171/-	तांत्रिक सर्वस्व 201/-
मंत्र-यंत्र-तंत्र विज्ञान भास्कर 501/-	जादूगर कैसे बने? 24/ ताश मैजिक 24/-
वृहद् संहिता (संपूर्ण फलित ग्रंथ) 121/-	घर बैठे जादू सीखिये 24/- ताशके जादू 5/-
असली प्राचीन रावण संहिता 501/-	जादूगर वादशाह 10/- दत्तात्रेय तंत्र 10/-
अ. प्रा. हस्त. भृगुसंहिता महाशास्त्र 501/-	महात्मा रावण कृत उड्डोष तंत्र 10/-
सच्चि स्त्री पुरुष वशीकरण सिद्धि 21/-	इच्छापूर्क सिद्धियां (मनवांछित फल की प्राप्ति) 24/- सच्चि करामात 15/-
भूत-प्रेत, जादू टोना, मंतर मूठ 21/-	वृ. वि. सामुद्रिक वि (सं. दो खंड) 163/50
प्रेतात्मा, डाकिनी, ओजाविद्या सिद्धि 21/-	असली प्राचीन सिद्धिदाता-यंत्र-तंत्र-मंत्र
देवी-देवता-पूजन यंत्र 21/-	महाशास्त्र (सम्पूर्ण दोनों खंड) 201/-
महाविद्यासिद्धि 21/- लघुमंत्रमहोदधि 21/-	कौआ यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र सिद्धि 10/-
हमजाद (छाया पुरुष) सिद्धि 21/-	उल्लू यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र सिद्धि 10/-
योगिनी सिद्धि 21/- भैरव सिद्धि 21/-	बाज, गिद्ध, मुर्गा यंत्र-तंत्र-मंत्र सिद्धि 10/-
यंत्र-शक्ति वि. 21/- तंत्र-शक्ति वि. 21/-	पंच पक्षी यंत्र-तंत्र-मंत्र सिद्धि 30/-
मंत्र-शक्ति वि. 21/- मोहनीवि. सिद्धि 21/-	यंत्र-मंत्र-तंत्र चिकित्सा 24/-
बटुक भैरव सिद्धि 21/- लक्ष्मी सिद्धि 21/-	प्राचीन सच्चि करामाती सिद्धियां 30/-
महाविष्णुराल भैरव सिद्धि 21/-	शिवतन्त्रावली (शिवजी के तंत्र) 3/-
किलकारीभैरव सि. 21/- कामाक्षा . 21/-	हनुमत् सिद्धि 71/- मोहिनीमंत्र-तंत्र 21/-
ऋद्धि-सिद्धि मंत्रावली 21/-	प्राचीन यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र सार 30/-
असली प्रा. सच्चि आकर्षणशक्तियां 24/-	अ. प्रा. हस्तलि. वृ. मंत्रमहोदधि 101/-
तांत्रिक साधन यंत्र, मंत्र, तंत्र सिद्धि 21/-	काला जादू (घर का मंदारी) 10/-
वशीकरण मोहिनी विद्या (हिप्नोटिज्म) 21/-	चीन जापान बंगाल आसाम का जादू 51/-
सिद्ध रुद्राक्ष प्रयोग विधि 21/-	जादू मिस्मिरेजम् 10/- वशीकरणमंत्र 15/-
देवी देवता हनुमान, छाया पुरुष एवं	अ. प्रा. हस्तलि० भारत का जादू 51/-
यक्षिणी भैरव सिद्धि के प्रयोग 21/-	वृ. इंद्रजाल (कीतुक रत्न भंडागार) 15/-
भूत-प्रेत, अश्वोरदक्षिणी विद्या सिद्धि 21/-	असली प्राचीन हस्तलि० इंद्रजाल 31/-
मनोकामना, कामाख्या, अष्टलक्ष्मीसिद्धि 21/-	असली प्राचीन डामर तन्त्र 21/-
रत्न-परिचय, रत्न-प्रदीप, रत्न विज्ञान 21/-	चौदह विद्या चौंसठ कला 15/-
स्वास्तिक एवं ॐ रहस्य 21/-	मायामछंदरजाल 51/- जादूगरीशिक्षा 15/-
पुस्तक सिद्ध बीसा यन्त्र 21/-	दक्षिण का जादू (जिन्दा जादूगर) 15/-
शिव मंत्रावली (तंत्रावली सहित) 21/-	सांवरी तन्त्र (सेवड़े का जादू) 15/-
मिस्मिरेजम् हिप्नो शक्तिचक्र सम्मोहन 21/-	नवीन अपट्टेड जादूगरी (दोनों भाग) 48/-
अ. प्राचीन यंत्र-मंत्र-तंत्रशिरोमणि 321/-	

पता  देहातो पुस्तक भण्डार चावड़ी बाजार दिल्ली-6



सकत पदारथ है जग माहो । भाग्यहीन नर पावत नाही ॥

असली, प्राचीन, हस्तलिखित ग्रन्थ



भृगुसंहिता महाशास्त्र (भा० टी०)

● प्राचीनकाल में जब कि आज की भांति छापाई आदि का प्रचलन नहीं था, हमारे ऋषियों-मुनियों ने ग्रन्थों की रचना करके अपनी निष्पत्तियों के अनुसार उन्हें अक्षरज स्मरण कराकर इस ज्ञान भण्डार को आगे बढ़ाया था । तत्पश्चात् ताड़ वृक्ष के पत्तों तथा भोजपत्र आदि पर इन ग्रन्थों को लिखा गया । बाद के कालखण्ड में विधिमियों तथा आतंकवादियों ने इन ग्रन्थों को नष्ट करने का सामूहिक तथा योजनाबद्ध प्रयास किया । इसका परिणाम यह हुआ कि सर्वांगीण पूर्ण ग्रन्थ दुर्लभाप्य हो गये । यदि कहीं कोई ग्रन्थ बचा तो उसके भी खण्ड-खण्ड हो गये अथवा विदेशों उठाकर ले गये । ऐसे ही दुर्लभ ग्रन्थों में "भृगुसंहिता महाशास्त्र" की गणना होती है, जिसका केवल नाम सुना था । कहा जाता है, किसी समय भृगु ऋषि द्वारा विष्णु भगवान की छाती में स्नात मारी जाने पर लक्ष्मी जी ने श्राप दिया था कि ब्राह्मण सदा निर्धन रहेंगे । तब भृगु जी ने लक्ष्मी जी से कहा था— "मैं एक ऐसा ग्रन्थ रचूंगा कि जिस किसी के पास यह महाग्रन्थ (भृगुसंहिता) होगा, लक्ष्मी सर्वदा उसका चरण-चुम्बन करेगी ।"

● अनेक अल्पज पंडित "भृगुसंहिता महाशास्त्र" के असली होने में संदेह करते हैं । यह ग्रन्थ प्राचीनकाल से ध्वंशगोचर होता रहा है । कुछ पंडित एवं ज्योतिषी जिनके पास हस्तलिखित ग्रन्थ का कुछ भाग पाया जाता है, वे कई पोटियों से ग्रन्थ को दिखा-सुनाकर जनता से उनकी कुण्डली का फलादेश बताकर 21/- (इक्कीस रुपये) से 551/- (पांच सौ इक्कावन) रुपये अथवा मह-मांगी दक्षिणा तक ले लेते हैं । श्री भृगु ऋषि रचित "भृगुसंहिता" जैसा भूत, भविष्य वर्तमान का पूर्ण विवरण बताने वाला महाग्रन्थ आज तक देखा न गया था, हा नाम ही सुना था । ● इस ग्रन्थ की भाग्यवान ही प्राप्ति कर सकता है ।

● संसार में कुछ भी असम्भव नहीं है । अनेक वर्षों तक अनयक परिश्रम तथा हजारों रुपया खर्च करके, कुण्डली के आधार पर भूत, भविष्य, वर्तमान का फलादेश बताने वाला हस्तलिखित "भृगुसंहिता महाशास्त्र" तैयार है ।

20 x 30/6 (पुराण साइज), खुले पत्राकार, हस्तलिखित 1,410 पृष्ठ, 14 खण्डों में सम्पूर्ण, ऑफसेट प्रिंट । इस विशाल ग्रन्थ में अगणित कुण्डलों की गई है । इस महाशास्त्र में वर्णित विधि अनुसार ससार के किसी भी व्यक्ति की जन्म-कुण्डली का फलादेश आसानी से ज्ञात हो जाता है । संस्कृत के प्लोको के साथ-साथ हिन्दी टीका इस ग्रन्थ की विशेषता है । सर्व जनोपयोगी इस विशाल ग्रन्थ की न्योछावर 501/- (पांच सौ एक रुपये) है । ग्रन्थ मौज्जिम सख्या में छपा है । अतः आज ही 51/- M.O. द्वारा भेजकर बाकी 450/- (चार सौ पचास) रुपये की वी० पी० द्वारा घर बैठे ग्रन्थ प्राप्त करें ।



देहाती पुस्तक भण्डार

चावडी बाजार, दिल्ली-६